Name - Jyoti Pal
Batch - 2016-19

Date : / /
Page No.

गालिब की हवेली

Q≥1. स्मारक का नाम ?
Ans≥ गालिब की हवेली ।

Q≥2. स्मारक का कार्य ?
Ans≥ उर्दू शायरी और कविता के अजीम शहंशाह मिर्जा गालिब की एक हवेली है जो हिंदुस्तान के दिल, पुरानी दिल्ली की कासिम जान बल्लीमारान नाम की गली में बसी हुई है। इस भीड़-भाड़ वाली संकरी गली में एक सुंदर दरवाजा खुलता है जहाँ गालिब के उन दिनों में जज्बात बेहद खूबसूरती से अल्फाजों से बयान होते हैं। गालिब की यह हवेली उनकी शायरी और मुगल सल्तनत के उस दौर को याद दिलाती है जब मुगलिया सल्तनत अपने पतन की ओर बढ़ रहा था। गालिब की हवेली इसलिए भी जरूरी है क्योंकि अगर गालिब को समझना हो तो उसके लिए गालिब की हवेली से बेहतर कोई स्थान स्थान नही गालिब को समझने

Date: / /
Page No.

के लिए।

Q ≠ 3. इस स्मारक का निर्माण किसने करवाया ?

Ans ≠ गालिब का पूरा नाम मिर्जा असदुल्लाह खान गालिब था। इनका जन्म दिसंबर 1797 में आगरा में हुआ तथा अपनी शादी के बाद जल्द ही उन्होंने अपने जन्मस्थान आगरा को छोड़कर दिल्ली में रहने लगे, वह शहर जहा वह 1869 तक रहे जब तक कि उनकी मृत्यु नहीं हुई। इस हवेली में मिर्जा गालिब ने वर्ष 1860 से 1869 तक अपने जीवन का अंतिम समय यही व्यतीत किया।

Q ≠ 4. इस स्मारक की खास बात क्या है तथा ऐसी क्या चीज है जो इस स्मारक को खास बनाती है?

Ans ≠ इस स्मारक की खास बात यह है कि यहां गालिब और उनकी शायरी से जुड़ी कई चीजें यहां सहेज कर रखी गई है। यहां गालिब की किताबें तो हैं उनकी हाथ से लिखी कविताएं भी

Date: / /
Page No.

रखी है। गालिब हुक्के का शौक रखते थे इसलिए हवेली में उनका रूप बनाकर रखा गया है जो हाथ में हुक्का पकड़ कर बैठा ~~गया~~ है। गालिब की हवेली के हर कोने में उनकी शायरी की खुशबू आए और आपका मन उसी दुनिया में खो जाएगा। किसी शायर के लिए गालिब की हवेली जन्नत से कम नहीं है। जहां बैठकर उसे लिखने की प्रेरणा मिलती रहे। इस हवेली में गालिब के अलावा उनके समकालीनों का भी पोट्रेट लगा है जिसमें उस्ताद जौक, अबू जफर, मोमिन मुख्य है। यहां पर लगी गालिब की प्रतिमा का अनावरण तत्कालीन मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने दिसंबर 2010 में किया था। गालिब ने इस हवेली में रहकर उर्दू और फारसी में 'दीवान' की रचना की थी।

Q ≠ 5. इस हवेली को विशेष लुक देने के लिए लाखोरी ईंटें, बालू पत्थर का प्रयोग किया गया है। हवेली की वास्तुकला और बनावट मुगलकाल में बनी अन्य इमारतों की ही याद दिलाएगी क्योंकि यह भी

Date : / /
Page No.

मुगल वास्तुकला के अनुसार ही बनी है। बड़े-बड़े स्तंभों के साथ हवेली का विशाल परिसर मुगलकाल के सम्पन्नता है।

Q ⇒ 5. यह स्मारक अच्छी स्थिति में है या नहीं ?

Ans ⇒ यह स्मारक अच्छी हालत में है परन्तु इतना नहीं जितना इसे होना चाहिए था। यानि इसका ध्यान ठीक से नहीं रखा जा रहा है और न ही गालिब की कृतियों को संरक्षित किया जा रहा है। इस स्मारक के संरक्षण के प्रति कोताही बरती जा रही है यानि इसके संरक्षण के प्रति सरकार उतनी जागरूक नहीं है बल्कि जनता भी जागरूक नहीं है।

Q ⇒ 6. इस स्मारक के खराब होने के कारण ?

Ans ⇒ इस स्मारक के खराब होने का कारण है इसके संरक्षण में लापरवाही। इस स्मारक के संरक्षण के प्रति कोई अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर रहा है। लोग

Date : / /
Page No.

इस स्मारक को देखने के लिए उत्सुक नहीं है। लोगों में इस स्मारक के प्रति संरक्षण की भावना नहीं है जिससे कि इस स्मारक को नुकसान हो रहा है।

Q ⇒ 7. इस स्मारक का संरक्षण किसके द्वारा किया जा रहा है?

Ans ⇒ गालिब की मौत के बाद हवेली में सालों 1999 तक बाजार लगता था। 1999 के बाद सरकार ने इसे राष्ट्रीय धरोहर घोषित कर दिया और इसका जीर्णोद्धार करवाकर इसे वापस मुगलकाल वाला रूप और गौरव देने की कोशिश। भारतीय पुरातत्व विभाग ने इसे धरोहर घोषित किया तथा इसका संरक्षण भी भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा किया जा रहा है।

Q ⇒ 8. इस स्मारक के आस-पास कौन-सी जगह स्थित है?

Ans ⇒ इस स्मारक के आस-पास बहुत से प्रसिद्ध स्थल मौजूद है, उदाहरण के लिए चाँदनी-चौक

Date : / /
Page No.

, जामा मस्जिद , शीशगंज गुरुद्वारा
, परांठेवाली गली तथा पुरानी दिल्ली
का बाजार आदि ।

Q→7. इस स्मारक तक कैसे पहुँचा
जा सकता है ?

Ans→ इस स्मारक तक बस तथा मैट्रो
से आसानी से पहुँचा जा सकता है।
इस स्मारक के पास चावड़ी
बाजार मैट्रो स्टेशन स्थित है जिसके
द्वारा इस स्मारक तक पहुँचा जा
सकता है।

7.5/10

मिर्जा गालिब का चित्र